P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-II * Issue-VII* December- 2015

# हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना

**सतपाल**
प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
बापौली, पानीपत, हरियाणा

**सारांश**

सार रूप में कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना साहित्य के क्षेत्र में अनेक पड़ावों को पार करती हुई अक्षुण्ण बनी रही हैं। बारहवी शताब्दी में हिन्दी साहित्य में खड़ी बोली का प्रयोग आरंभ हो चुका था और आगे चलकर भारतेन्दु युग व द्विवेदी युग में खड़ी बोली में प्रचुर साहित्य लिखा गया जिससे लोगों में सामाजिक चेतना जागृत हुई। सामाजिक चेतना का अर्थ भी यही होता है कि ऐसा साहित्य जो समाज के लोग आसानी से समझ सके और उनकी भावनाओं व पीड़ाओं की अभिव्यक्ति जिस साहित्य में हुई हो, उसे ही सामाजिक चेतना से युक्त साहित्य कहा जाता है और इस दृष्टिकोण से हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना पर्याप्त रूप में विद्यमान हैं।

**मुख्य शब्द** : समाज, चेतना, कोष, साहित्य, गद्य।

**प्रस्तावना**

**समाज का अर्थ**

समाज का अर्थ है– ''एक ही स्थान पर रहने वाले या एक ही प्रकार का व्यवसाय करने वाले वे लोग जो मिलकर अपना एक अलग समूह बनाते हैं।''[1]

श्री शम्भुरत्न त्रिपाठी ने भी समाज को ऐसे परिभाषित किया है–''समाज का सामान्य अर्थ व्यक्तियों का समूह हैं। मनुष्य मनुष्यों से पृथक रहकर अपने अस्तित्व की रक्षा करने में असमर्थ होता है। अपने अस्तित्व की रक्षा करने हेतू उसे अपने आसपास के व्यक्तियों से संबंध स्थापित करना आव"यक हैं। व्यक्तियों के इन सामाजिक सम्बन्धों को समाज कहता हैं।''[2] विभिन्न शब्द–कोषों के अध्ययन से मालूम हुआ कि–''समाज'' शब्द को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है–

समाज–सम–अज, मिटिंग विथ, फॉलिंग इनविथ, ए मीटिंग, असैम्बली।[3]

अंग्रेजी भाषा में 'समाज' शब्द के समानार्थक शब्द 'सोसायटी' का अर्थ है धर्म, परोपकार, संस्कृति, विज्ञान, राजनीति, दे"ाभक्ति या अन्य उद्दे"यों हेतू परस्पर सम्बद्ध व्यक्तियों का संगठित समूह।[4]

**चेतना का अर्थ**

'चेतना' शब्द का शाब्दिक अर्थ– संज्ञानार्थक चित् धातु में 'युच' प्रत्यय लगाने से 'चेतना' शब्द बनता हैं। 'न्यास' ग्रंथ में संज्ञान के अर्थ में 'चित्' शब्द का प्रयोग किया गया है और कहा गया है कि जिसके (अर्थात मन की जिस वृत्ति या शक्ति) के द्वारा संज्ञान होता है, उसे चेतना कहते हैं।''[5]

वाचस्पति श्री तारानाथ ने बुद्धि और ज्ञान के अर्थ में 'चेतना' शब्द को ग्रहण किया हैं।''[6]

अमरको"ा में भी चेतना को बुद्धि के अर्थ में ग्रहण किया गया हैं।[7] संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ के अनुसार संस्कृत में 'चेतना' शब्द संज्ञा, बोध, समस, बुद्धि विवेक आदि अर्थों में प्रयुक्त होता हैं।[8] हिन्दी शब्द सागर में भी 'चेतना' शब्द के लगभग ये ही अर्थ दिये गये हैं।''[9]

मानक हिन्दी को"ा के अनुसार चेतना मन की वह वृत्ति या शक्ति हैं, जिससे जीवन या प्राणी को आन्तरिक (अनुभूतियों, भावों विचारों) आदि और बाह्य (घटनाओं, तत्वों या बातों) का अनुभव होता है।[10]

हिन्दी साहित्य को"ा में 'चेतना' शब्द को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि– चेतन मानस की प्रमुख वि"ोषता चेतना है अर्थात वस्तुओं, विषयों एवं व्यवहारों का ज्ञान।.....

चेतना की प्रमुख वि"ोषताएं हैं निरन्तर परिवर्तन"ाीलता या प्रवाह, इस प्रवाह के साथ–साथ विभिन्न अवस्थाओं में हैं, एक अविच्छिन एकता और साहचर्य। चेतना का प्रभाव हमारे अनुभव वैचित्र्य से प्रभावित होता है और चेतना की अविच्छिन एकता हमारे व्यक्तिगत तादात्म्य के अनुभव से विभिन्न

विषयों की अलग–अलग समय पर चेतना होने पर भी हम सदा यह अनुभव करते हैं कि मैंने अमुक वस्तु देखी थी।[11]

**सामाजिक चेतना का अर्थ**

समाज एवं चेतना संबंधी उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्य परम्पराओं, रीति–रिवाजों, आचार–व्यवहार की पद्धतियों के कारण परस्पर संगठित व्यक्तियों के समूह तथा उसके विभिन्न वर्गों, उपवर्गों के जीवन, उनकी गतिविधियों, विविध क्रिया–कलापों, अभावों एवं विव"ाताओं, आ"ाओं एवं आकांक्षाओं, न्यूनताओं एव उपलब्धियों के संबंध में जागरूकता बोध एवं सदासद्–विवेक तथा तज्जन्य प्रतिक्रिया सामाजिक चेतना कहलाती है।

**सामाजिक चेतना का विश्लेषण**

चेतना व समाज के स्वरूप को हृदयगम करते हुए कहा जा सकता है कि यदि सामाजिक स्वरूप को जैसा वह उस युग में है उसे उसी रूप में ग्रहण कर साहित्य में अभिव्यक्त किया जाए तो वह साहित्य में सामाजिक चेतना का उद्घाटन होगा। डॉ0 रत्नाकर पाण्डेय के शब्दों में– 'प"ाुओं से भिन्न अर्थात् जनसमूह या जन–समाज की ज्ञानात्मक मनोवृत्ति का नाम सामाजिक चेतना हैं।[12]

**हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना**

हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना को साहित्यिक दृष्टि से दो भागों में बांटा जा सकता है– (1) पूर्ववर्ती गद्य काल (2) परवर्ती गद्य काल। पूर्ववर्ती गद्य काल के अंतर्गत निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा सकता हैं–

**खड़ी बोलीः उद्भव और विकास की चेतना**

यद्यपि खड़ी बोली में साहित्य–रचना बारहवीं शताब्दी से ही प्राप्त होने लगी थी परन्तु सत्य यह है कि ब्रज और अवधी बोलियों की साहित्यिक गरिमा ओर प्रतिष्ठा के समक्ष वह भाषा उस समय विकास न कर सकी। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ और पा"चात्य सभ्यता की होड़ के कारण ब्रज, अवधी मैथली आदि बोलियों में विरचित धार्मिक, दा"ानिक तथा आध्यात्मिक दृष्टिकोण से रचा गया काव्य–साहित्य पुराना पड़ गया और धीरे–धीरे ये बोलियों गद्य और पद्य दोनों के अनुपयोगी सिद्ध होने लगी। पा"चात्य संपर्क की नवीनता का आग्रह था कि नूतन साहित्यिक आद"ार्श से संभूत स्फूर्तिदायक और महत्वपूर्ण गद्य रचनाएं मध्य दे"ा में भी की जायें। फलतः अनेक उपयोगी विषयों से सम्बद्ध अधिकाधिक ग्रन्थ खड़ी बोली गद्य में लिखे जाने लगे।

**हिन्दी गद्यः उद्भव ओर विकास की चेतना**

हिन्दी के प्रारम्भिक गद्य का अनु"ाीलन करने से ज्ञात होता है कि प्राचीन गद्य के तीन रूप प्राप्त हैं।

**राजस्थानी गद्य**

राजस्थानी गद्य परवानों, दानपत्रों, जैनग्रंथों, काव्य"ाास्त्र, इतिहास, राजनीति, ज्योतिष, गणित आदि विविध विषयों की रचनाओं से परिपूर्ण हैं। आगे चलकर राजस्थानी गद्य के अनुवाद भी मिलने लगते हैं। राजस्थानी गद्य पर संस्कृत की समास शैली और अपभ्रं"ा भाषा के गठन का प्रभाव था।

**ब्रजभाषा गद्य**

ब्रजभाषा गद्य की परम्परा का प्रारम्भिक स्वरूप गोरखपन्थी योगियों के धार्मिक ग्रन्थों में मिलता है। भक्तिकाल में कृष्णभक्ति शाखा के अंतर्गत ब्रजभाषा गद्य का प्रयोग दिखाई पड़ता हैं।

**खड़ी बोली गद्य**

खड़ी बोली के व्यवहार का प्रारम्भिक रूप हेमचन्द्र के व्याकरण में मिलता है। चौदहवीं शदो में अमीर खुसरो की रचनाओं में खड़ी बोली का व्यवहारिक और विकसित रूप दिखाई पड़ता है।

**ईसाई मिशनरियाः हिन्दी गद्य की चेतना**

सर्वप्रथम ईसाई मि"ानरी की स्थापना सन् 1793 ई0 कलकत्ता के निकट सी–रामपुर में कैरे महोद्य के प्रयत्नों से हुई। इसकी स्थापना के थोड़े ही दिन बाद सन् 1800 ई0 में वहां एक सुव्यवस्थित प्रेस भी खोला गया। सबसे पहले बंगला में बाईबिल का अनुवाद सन् 1801 ई0 में प्रका"ाित किया गया। यह अनुवाद बंगला भाषा की मुद्रित सबसे पहली पुस्तक हैं। सन् 1803 ई0 में बाईबिल का पहला हिन्दी अनुवाद कैरे साहब ने 'नये धर्म नियम' के नाम से प्रका"ाित किया। भारतवर्ष की सात प्रमुख भाषाएं– बंगला, हिन्दुस्तानी, उड़िया, तेलगू, कन्नड़, उर्दू और तमिल में यह योजना चली।

**आर्यसमाजः हिन्दी गद्य की चेतना**

स्वामी दयानंद सरस्वती ने बंगाल के ब्रह्म समाज से प्रेरणा लेकर 10 अप्रैल सन 1875 ई0 को बंबई में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज खड़ी बोली के गद्य विकास के आंदोलन की महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों का प्रतिरूप हैं। स्वामी जी ने स्वयं हिन्दी का यथेष्ट ज्ञान अर्जित किया और प्रत्येक आर्य समाजी के लिए हिन्दी पढ़ना अनिवार्य कर दिया। स्वामी जी द्वारा रचित 'संस्कार विधि' ग्रन्थ में हिन्दुओं के सोलह वैदिक संस्कारों की व्याख्या की गई हैं। इनका गौरव ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रका"ा' द्वारा खड़ी बोली के गद्य की आ"ाातीत उन्नति हुई।

**तत्कालीन पत्र–पत्रिकाएंः हिन्दी गद्य की चेतना**

भारतीय भाषाओं में समाचार पत्र प्रका"ान का श्रेय ईसाई धर्म प्रचारकों को दिया जा सकता हैं। सन् 1817 ई0 सी रामपुर बैप्टिस्ट मि"ानरी से 'दिग्द"ार्शन' नामक मासिक पत्र प्रका"ाित हुआ। कुछ ही दिनों बाद सन् 1818 ई0 में, वहीं से 'समाचार दर्पण' और कलकत्ता से 'बंगाल गजट' नामक दो बंगला यत्र प्रका"ाित हुए। ईसाई मत का समर्थन करने वाले इन पत्रों से भारतीय धर्म, f"ाक्षा और संस्कृति का विना"ा होते देखकर राजा राममोहन राय ने f"ाक्षित, उदार और प्रगति"ाील विचारों के प्रचार के लिए सन् 1820 ई0 में बंगला में 'संवाद कौमुदी' तथा अंग्रेजी और बंगला में 'ब्रायैनिकल मैगजीन' तथा फारसी भाषा में 'मीराते–उल अखबार' का प्रका"ान प्रारम्भ किया।

हिन्दी में प्रका"ाित पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' हैं। इसका प्रथम अंक 30 मई 1826 ई0 का तथा अंतिम अंक 11 दिसम्बर सन् 1827 ई0 को प्रका"ाित हुआ। सन् 1845 ई0 में बनारस से 'बनारस अखबार' प्रका"ाित हुआ। इस प्रकार हिन्दी के गद्य के विकास में विगत पत्रकार कला की उपलब्धि अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

**भारतेन्दु युगीन गद्यः सामाजिक चेतना**

भारतेन्दु काल में उपन्यास, नाटक, निबंध, समालोचना, जीवनी आदि की रचनायें प्रारम्भ हुई।

**उपन्यास**

उपन्यासों के निर्माण में कि"ोरी लाल गोस्वामी ने 'त्रिवेणी' 'स्वर्गीय' 'हृदयहारिणी' लवंगलता' की रचना की। श्रीनिवास दास ने 'परीक्षा गुरू' लिखा, देवकी नन्दन खत्री ने 'चन्द्रकान्ता', 'नरेन्द्र' नामक उपन्यास लिखे। बालकृष्ण भट्ट का 'नूतन ब्रह्मचारी' और 'सौ अजान एक सुजान' प्रसिद्ध है। इस काल में उपन्यास कला का प्रारम्भ हुआ था। उनमें सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, नीति और उपदे"ाों की झलक मिलती ह।

**नाटक**

भारतेन्दु ने 'चंद्रावली', 'भारत दुर्द"ाा', 'नीलदेवी', 'विद्यासुन्दर', 'कर्पूर मंजरी', 'मुद्राराक्षस', 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति', विषय विषमौषधम् तथा अन्य मौलिक और अनुदित नाटकों और प्रहसनों की रचना करके इस क्षेत्र में युगनिर्माण का कार्य प्रारम्भ किया।

**समालोचना**

भारतेन्दु युग में समालोचना पुस्तक परिचय के रूप में प्रचलित हो चुकी थी। उस समय सन् 1877 ई0 में श्रीनिवासदास के 'संयोगिता स्वयंवर' की आलोचना उल्लेखनीय हैं।

**परवर्ती गद्य काल (द्विवेदी युग)**

इस काल के अन्तर्गत निम्नलिखित शीर्षकों पर विचार किया जा सकता हैः–

**द्विवेदीयुग की पृष्ठभूमिः सामाजिक चेतना**

द्विवेदीयुग का साहित्य गोष्ठियों, संस्थाओं और पढ़े–लिखे लोगों के मनोरंजन का साधन मात्र न रहकर समाज के व्यापक क्षेत्र में अवतरित हुआ। समाज और साहित्य का उत्तरोत्तर संबंध बढ़ने के कारण साहित्य जन–चेतना का एक आव"यक अंग बन गया।

**नाटय चेतना**

इस काल में नाट्य–साहित्य की दो स्वतंत्र क्षीण धाराओं के द"र्ान होते हैं–

1. रंगमंचीय नाटक
2. साहित्यिक नाटक

इस काल में रंगमंचीय नाटकों की प्रधानता रही। रंगमंच भारतेन्दु काल से ही पारसी कम्पनियों के अधिकार में था। बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में नाटकों की मूल प्रेरणा रामायण, महाभारत और पुराणों के महिमामय चरित रहे हैं। सुविधा की दृष्टि से उनका विभाजन इन वर्गों में किया जा सकता हैः **1.** प्रेम प्रधान साहसिक नाटक **2.** पौराणिक नाटक **3.** ऐतिहासिक नाटक **4.** सामाजिक नाटक **5.** रूपात्मक नाटक।

**औपन्यासिक चेतना**

बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण के उपन्यासों को रचना विद्या की दृष्टि से निम्नलिखित उपविभाजनों में सन्निविष्ट किया जा सकता हैः

1. घटना प्रधान
(क) तिलस्मी उपन्यास
(ख) साहसिक उपन्यास
(ग) जासूसी उपन्यास
(घ) पौराणिक उपन्यास
(ज) विविध कथा प्रधान उपन्यास।
2. चरित्र प्रधान उपन्यास
3. भावनाप्रद उपन्यास

इस काल के उपन्यास–साहित्य ने कला और उपादान सभी दृष्टियों से भारतेन्दु काल से अधिक उन्नति की।

**द्विवेदीयुगीन कथा चेतना**

सरस्वती के प्रका"ान काल से हिंदी कहानियों का प्रारम्भ होता है। इस युग के कथा साहित्य में प्रसाद, गुलेरी और प्रेमचन्द ये तीनों तीन दि"ाओं के निदे"ाक हैं। प्रेमचन्द और प्रसाद ने अनेक कहानियां लिखी, परन्तु गुलेरी जी अपनी एकमात्र कहानी 'उसने कहा था' के कारण हिन्दी कहानी जगत् में स्थायी महत्व के अधिकारी हैं। सन् 1920 ई0 तक ि"ावपूजन सहाय, चतुरसेन शास्त्री, बदरीनाथ भट्ट, राधाकृष्ण दास, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', चण्डीप्रसाद हृदये"ा, गोविन्दबल्लभ पंत, सुद"र्ान, सुमित्रानन्दन पंत, आदि की कहानियों हिन्दी में आ चुकी थी। इस प्रकार इस युग में कहानी का प्रारंभ हुआ और उत्थान के अनेक मोड़ों से गुजरती हुइ कहानी कला दिनों दिन विकसित होती गई।

**द्विवेदीयुगीन निबंध चेतना**

'सरस्वती' के प्रका"ान से निबंधों का उत्थान प्रारम्भ हुआ। 'सरस्वती' में द्विवेदी जी ने भाषा की व्याकरणसम्मत शुद्धता के लिए अथक परिश्रम कर निबंधों को नये सांचे में ढाल दिया। इस युग के प्रारम्भ में द्विवेदीजी ने 'बेकन विचार रत्नावली, का अनुवाद किया और चिपलूणकर के 'निबन्धमा आद"ार्' का अनुवाद गंगा प्रसाद अग्निहोत्री ने किया। इस युग के अन्य प्रमुख निबंधकार बालमुकन्द गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, सरदार पूर्णसिंह और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल है।

**द्विवेदीयुगीन समीक्षा चेतना**

हिन्दी में आलोचना का उदय अत्यंत विलंब से हुआ। चौधरी बदरीनारायण उपाध्याय 'प्रेमधन' ने हिन्दी में आलोचना लिखने का प्रवर्तन सन् 1882 ई0 में किया। उन्होनें लाला श्रीनिवास दास के 'संयोगिता स्वयंवर' का नाट्य दोष दिखलाया और गदाधरसिंह द्वारा अनूदित 'अंग विजेता' की भाषा–संबंधी त्रुटियों का भी निर्दे"ान किया। द्विवेदीयुगीन आलोचना म जीवन की सजगता हैं, किन्तु कला की सजगता के द"र्ान नहीं होते। इस यग में परिचय प्रधान, गवेषणात्मक, सैद्धान्तिक, शास्त्रीय, प्रभाववादी, तुलनात्मक और चिंतन"ाील प्रवृत्तियां आलोचना के क्षेत्र में प्रत्यक्ष हुई। इस काल में कठिनाई से कुछ ही अच्छी समालोचना की पुस्तके सामने आई। हिन्दी में द्विवेदी युग समालोचना के प्रारम्भ की पूर्व पीठिका हैं। फिर भी समीक्षा के क्षेत्र में द्विवेदी युग की देन आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और डॉ0 श्यामसुन्दर दास हैं जो स्वस्थ हिन्दी आलोचना के प्रारम्भकर्त्ता माने जाते हैं।

**साहित्यिक संस्थाओं की चेतना**

द्विवेदी युग के पूर्व में नागरी प्रचारिणी सभा जैसी साहित्यिक संस्था स्थापित हो चुकी थी। अन्य संस्थाओं की सूची नीचे दी जा रही जिनसे हमारी साहित्यिक और सामाजिक चेतना उद्बुद्ध होकर किया"ाील हुईः–

1. दि बनारस इंस्टीट्यूट, बनारस।
2. दि इलाहाबाद इंस्टीट्यूट, इलाहाबाद।
3. दि फ्रच डिवेंटिग सोसायटी, इलाहाबाद।
4. दि कारमाइकेल लाइब्रेरी ए"ाोि"ाये"ान, बनारस।
5. दि यूनियन क्लब, बनारस।

6. थियोसाफिकल सोसायटी, बनारस।
7. कविता वर्द्धिनी सभा, बनारस इत्यादि संस्थायें द्विवेदी युग में या उसके आगमन काल के पहले स्थापित हुई थी। जीवन और साहित्य में नवीन प्रतिमानों की स्थापना में इनका अपरिमित योगदान हैं।

**खडो बोली काव्य की सामाजिक चेतना**

ब्रज, अवधी, बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, गढ़वाली आदि उपभाषाआ से उन्मुख होकर हिन्दी कविता खड़ी बोली के माध्यम से रची जाने लगी। काव्य के लिए तथाकथित आचार्यों द्वारा अनुपयुक्त घोषित खड़ी बोली भाषा की तीव्र काव्य अनुभूति की सफल अभिव्यक्त कर भारतेन्दु और उनके मंडल के कवियों ने भारतीय प्राणों में सामाजिक चेतना का संचरण प्रारंभ किया। उन्होंने हिन्दी कविता को नया मोड़ दिया ओर भविष्य में लिखी जाने वाली अब तक की कविता चाहे वह नई कविता या अकविता ही क्यों न हो, उसी खड़ी बोली में लिखी जाने लगी जिसका सूत्रपात इस युग में युग भगीरथ भारतेन्दु ने किया था।

**निष्कष**

निष्कष रूप म कहा जा सकता ह कि हिन्दो साहित्य का इतिहास लिखन को परम्परा कविमाला (1655 इ0) स आरम्भ हातो ह आर आज तक निरन्तर अक्षण्ण बनो हइ ह। परन्त काल क्रम क विभाजन व नामकरण का पथम पयास 'मिश्रबन्ध' रचित 'मिश्रबध विनाद' म हो किया गया ह। पाश्चात्य विद्वाना म काल विभाजन व नामकरण का अच्छा पयास 'जाज गियसन' रचित 'द माडन वनाक्यलर लिटरचर आफ हिदास्तान म किया गया ह। इसपकार हम कह सकत ह कि भारतोय व पाश्चात्य विद्वाना म मिश्रबधआ व जाज गियसन का हिन्दो साहित्य का इतिहास लिखन का पथम श्रय जाता ह। लकिन इसका मानक रूप 'आचाय रामचन्द शक्ल' रचित 'हिन्दो साहित्य का इतिहास' का हो माना जाता ह आर पश्चातवतो सभो विद्वाना न इसका अनकरण किया ह।

**संदभ ग्रंथ सूची**

1. श्याम सुन्दरदासः– हिन्दी शब्द सागर (दसवां भाग), पृ0 4968।
2. श्री शम्भुरत्न त्रिपाठीः– समाज"ाास्त्र के आधार, पृ0 33।
3. सर मोनियर विलियमः– संस्कृत इंगलि"ा डिक"ानरी, संस्करण 1956, पृ0 1153।
4. दी रेन्डम हाउस डिक"ानरी ऑफ इंग्लि"ा लैंग्वेज, पृ0 1351।
5. 'चेतयते उनमा इति। चित् संज्ञानेन्यास ग्रन्थति, शब्द कल्पद्रुम, द्वितीय काण्ड, पृ0 459।
6. चेतना–चित–युच्। बुद्धौ। ज्ञानै। वाचस्पत्यम्, चतुर्थ भाग, पृ0 2963।
7. बुद्धिः इत्यभरः। यथा, भागवते, प्रधानकाला शयधर्म्य संग्रहे, शरीर एवं प्रतिपद्य चेतनाम्।'' शब्दकल्पद्रुमः द्वितीय काण्ड, पृ0 459।
8. द्वारका पसाद शर्मा (संपादक)–संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ0 439।
9. चेतना–संज्ञा स्त्रीलिंग (सं0)– बुद्धि 2. मनोवृत्ति, 3. ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, 4. स्मृति। सुधि। याद। 5. चेतनता। चैतन्य संज्ञा, हो"ाा, क्रि0अ0 (हि0 चेतना प्रत्यय) संज्ञा में होना। हो"ाा में आना, 12. सावधान होना।
10. संपादक रामचन्द्र वर्माः– मानक हिन्दी को"ा, दूसरा खंड, पृ0 274।
11. डॉ0 धीरेन्द्र वर्माः– हिन्दी साहित्य को"ा, प्रथम संस्करण, पृ0 289।
12. डॉ0 रत्नाकर पाण्ड़ेयः– हिन्दी साहित्य सामाजिक–चेतना, प्रथम संस्करण, पृ0 155।